शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षाणर्थियों मे आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. किरण गिल
प्राचार्या, दीनदयाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, फतेहपुर, सीकर (राजस्थान)
ईमेलः drkiran57@gmail.com

प्राप्तिः 01.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य बी.एस.टी.सी. के प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास के स्तर का अध्ययन करना है। न्यादर्श के रूप में 200 प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है। दत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निश्चित आत्मविश्वास प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि बी.एस.टी.सी. के प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्द : *बी.एस.टी.सी., आत्मविश्वास, प्रशिक्षणार्थी।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा का समय है और ऐसे समय में प्रत्येक व्यक्ति सफलता पाने के हेतु प्रयासरत है। सफलता में मेहनत का तो मुख्य स्थान है ही किन्तु ऐसे भी है जो सफलता प्राप्ति में अपनी भूमिका का निर्वाह करते है।

आत्मविश्वास एक व्यक्तित्व का ऐसा ही घटक है जो सफलता को सीधे रूप में प्रभावित करता है। आत्मविश्वास व सफलता का ऐसा संबध है कि आत्मविश्वास से सफलता शीघ्र प्राप्त हो जाती है और सफलता प्राप्त होने से आत्मविश्वास में वृद्वि हो जाती है अर्थात् वे दोनों एक दूसरे पर परस्पर निर्भर रहतें है।

आत्मविश्वास के निर्माण में भूतकाल की बहुत बड़ी भूमिका होती है अर्थात् जिस बालक का भूतकाल बिना चिंता के तथा सफलतापूर्वक व्यतीत हुआ होता है उसका आत्मविश्वास का स्तर उतना ही उच्च होता हैं। जबकि जिस बालक का भूतकाल जितना अभावग्रस्त, समस्यात्मक व असफलताओं में गुजरा होता है उसके आत्मविश्वास का स्तर उतना ही निम्न कोटि का होता है। इसी आत्मविश्वास के स्तर से सफलता की संभावना जुड़ी होती है और जब मनुष्य जीवन में असफलता को प्राप्त करता है तो अराजक हो जाता है जो संपूर्ण मानव समाज के लिए खतरा

बन जाता है, इसलिए कहा भी गया है कि

जब तक मनुज–मनुज का यह सुख भाग नही सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नही कम होगा।

अर्थात् यदि हम गहनता से देखें तो वर्तमान समाज में व्याप्त अराजकता का परोक्ष रूप से संबध आत्मविश्वास से है। यहॉ शोधार्थी द्वारा उक्त मनोवैज्ञानिक घटक के स्तर का अध्ययन बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया है। उक्त चयन का कारण शोधार्थी की यह जिज्ञासा थी कि क्या बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त है या नहीं? और यदि है तो क्या इनमें लिंगगत या विषमगत कोई भेद है और इनका उनके आत्मविश्वास पर क्या प्रभाव पड़ा है?

प्रस्तुत शोध अध्ययन का औचित्य

शोधकार्य करने हेतू शोधार्थी द्वारा सामान्यतया ऐसे शोधशीर्षक का चयन किया जाता है जो समाज देश की वर्तमान परिस्थितियों से जुड़ा हुआ है और आवश्यकतानुसार हों। प्रस्तुत शोध अध्ययन भी वर्तमान में बी.एस.आई.सी. कर रहे प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास से संबधित है। लगभग देखा जाता है कि आज बहुत से ऐसे कारक है जो अभिभावकों व विद्यार्थियों में तनाव व थकान को जन्म देतें है । कुछ तो व्यक्ति की आवश्यकताएं बढ़ने के कारण व्यक्ति को अधिक धन व श्रम की आवश्यकता होती है साथ ही बस्ते का बोझ व प्रतियोगिता में आगे निकलने की होड़ ने आज विद्यार्थियों को तनाव में ला दिया है। जिस कारण उनका आत्मविश्वास स्तर कम होता जा रहा है। कक्षा में शिक्षकों का व्यवहार अभिभावकों की अधिक से अधिक प्राप्ति की ईच्छा आदि भी इस हेतु उत्तरदायी है। अतः वर्तमान शोध शीर्षक का औचित्य स्वयं सिद्व है जो पूर्ण होने पर समाजविद्वो, अभिभावकों व शिक्षाविद्वों को प्रशिक्षार्थियों को तनाव से दूर रखकर उनके आत्मविश्वास स्तर को बढ़ाने हेतु प्रेरणादायी होगा, ऐसी आशा है।

शोध के उद्वेश्य

प्रस्तुत शोध वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या आत्मविश्वास के गिरते स्तर पर की गई है।

शोध के प्रमुख उद्वेश्य निम्न प्रकार है

1. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास के स्तर का आंकलन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाऍ

हम जानते हैं कि परिकल्पनाएं ही किसी भी शोध का आधार होती हैं क्योंकि जब तक परिकल्पना नहीं होगी तब तक परीक्षण किसका किया जाएगा। यहां शोधार्थी ने निम्न परिकल्पनाओं का चयन किया है

1. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. शहरी एवं ग्रामीण के बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

न्यादर्श

उपर्युक्त शोध हेतु शोधार्थी ने सीकर शहर के दो अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय के 200 छात्रों का यादृच्छिक विधि से निम्न प्रकार चयनित किया है।

न्यादर्श

200 प्रशिक्षणार्थी			
100 महिला		100 पुरूष	
50 ग्रामीण	50 शहरी	50 ग्रामीण	50 शहरी

उपकरण

शोध के निष्कर्ष हेतु समंको की आवश्यकता होती है और उपर्युक्त शोध में समंको के एकत्रीकरण हेतु एक प्रपत्र को उपकरण हेतु चयन किया गया है शोधार्थी ने उपकरण के रूप में डॉ. रेखा गुप्ता के आत्मविश्वास सूची को चुना है।

शोधविधि

प्रस्तावित शोध अध्ययन एक सर्वेक्षण शोधकार्य है। चयनित उपकरण के माध्यम से शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण के माध्यम से ऑकड़ो का संग्रह किया गया है। तथ्यों के स्पष्टीकरण हेतु पुस्तकों, पत्रिकाओं, शोधपत्रों आदि का प्रयोग किया है। निष्कर्ष प्राप्ति हेतु प्राप्त समंको का व्यवस्थापन सारणीयन कर व्याख्या, विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

शोधार्थी ने अपने शोधकार्य में चयनित परिकल्पनाओं की जॉच की और परिकल्पनाओं की जॉच के आधार पर शोधार्थी ने निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए।

प्रथम परिकल्पना

बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

सारणी सं 01

प्रदत्त	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
बी.एस.टी.सी. महिला प्रशिक्षणार्थी100	27.84	5.13	1.92
बी.एस.टी.सी. पुरुष प्रशिक्षणार्थी100	26	4.53	

उपरोक्त सारणी संख्या 01 में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया। जिसमें आत्मविश्वास सम्बन्धी मध्यमान 27.84 व 26 तथा प्रमाप

विचलन 5.13 व 4.53 व टी–मूल्य 1.92 प्राप्त हुआ है। जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 व 0.05 के सारणी मान 2.63 से कम है। अतः इस आधार पर उपरोक्त परिकल्पना को स्वीकृत कर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बी.एस.टी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

द्वितीय परिकल्पना

शहरी एवं ग्रामीण बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

सारणी सं. 02

प्रदत्त	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
बी.एस.टी.सी.शहरीप्रशिक्षणार्थी 50	26.78	5.72	2.24
बी.एस.टी.सी.ग्रामीण प्रशिक्षणार्थी 50	24.36	5.08	

उपरोक्त सारणी संख्या 02 में बी.एस.टी.सी. शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया। जिसमें आत्मविश्वास सम्बन्धी मध्यमान 26.78 व 24. 36 तथा प्रमाप विचलन 5.72 व 5.08 व टी–मूल्य 2.24 प्राप्त हुआ है। जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 व 0.05 के सारणी मान 2.63 से कम है। अतः इस आधार पर उपरोक्त परिकल्पना को स्वीकृत कर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बी.एस.टी.सी. के प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

शैक्षिक उपयोगिता

कोई भी शोधकार्य किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किया जाता हैं। प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन कर उन्हें आत्मविश्वास वृद्वि हेतु प्ररित करना रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन जिन प्रशिक्षणार्थियों का आत्मविश्वास स्तर निम्न पाया गया है उनकें अभिभावकों हेतु प्रेरणास्त्रोंत बनकर उनके आत्मविश्वास को समृद्व करने में सहयोग करेगा साथ ही शिक्षाविद्वों को विद्यालयों व कक्षाओं में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर को बढ़ानें हेतु प्रेरणा शिविर व अन्य कार्यक्रम आयोजित करने हेतू प्ररित करेगाा तथा शिक्षाविद्वों को पाठ्यक्रम में आत्मविश्वास बढ़ानें में सहायक पाठ्यसामग्री को शामिल करने में सहयोग करेगा तथा जिन प्रशिक्षणार्थियों का आत्मविश्वास उच्चस्तरीय है उनसे देशसेवा व समाजसेवा में उसके सहयोग हेतु सार्थक सिद्व होगा।

भावी शोध हेतू सुझाव

उक्त शोधकार्य के आगे भी कार्य की सम्भावनाएॅ बनी हुई है। ये क्षेत्र निम्न प्रकार संभव है–

1. दो पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियो के मध्य आत्मविश्वास के स्तर का आंकलन करना।

2. कार्यरत और बेरोजगारों के बीच आत्मविश्वास के स्तर का आंकलन करना।
3. शासकीय एवं अशासकीय सेवारत लोगों के मध्य आत्मविश्वास के स्तर का आंकलन करना इत्यादि।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अस्थाना विपिन, श्रीवास्तव विजया, अस्थाना निधि *'शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी''* अग्रवाल पब्लिकेशन संस्करण 2011 पृ0 **718–19**
2. अग्निहोत्री रेखा (1987) *' 'मैन्यूअल फोर सेल्फ कॉनफिडेन्स"* इन्वेन्ट्री नेशनल साइकोलॉजीकल कॉरपोरेशन, आगरा।
3. आर्य पी. के. *''आत्मविश्वास सफलता की सीढी है''* हिन्दी पुस्तिका कक्षा 6, राजस्थान पुस्तक मण्डल
4. कटारिया चित्रांश *"आत्म विश्वास का आसरा"* राजस्थान पत्रिका (1 जून 2015)
5. कौर रमनदीप सिंधु, कौर गगनदीप *"किशोरों में आत्मविश्वास से सम्बन्धित भावानात्मक सामर्थ्यता का अध्ययन"* एजुकेशन रिसर्च Volume-3 Sept-2014
6. गोस्वामी हेमलता–*"व्यक्तित्व शीलगुण, आत्मविश्वास पर उच्च निम्न उपलब्धियों के छात्र–छात्राओं के निवास के प्रभाव का अध्ययन"* शिक्षा मित्र (2016सितम्बर) पृ0 **30**
7. डॉ. रायजादा बी. एस. (1997) *''शिक्षा अनुसंधान के आवश्यक तत्व''* पृ0 **16–27, 172**
8. डॉ. शर्मा के. के., डॉ. त्रिवेदी सुधा, डॉ. शर्मा प्रभा, गर्ग ओ. पी. *''शिक्षा शब्दकोष''* स्वाति पब्लिकेशन पृ0 **5. 363, 402, 402**
9. डॉ. शर्मा मीना *"ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉनफिडेन्स ऑफ सीनियर सैकण्डरी स्कूल स्टूडेंटस इन ि रलेशन टू सोशो इकोनोमिक स्टेटस"* AIJR Dec- 2015
10. ट्रेवर्स एम. डब्ल्यू, *''शिक्षात्मक अनुसंधान की प्रस्तावना'',* हिन्दी संस्करण, किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद, 1964, पृ0 **681**
11. पं. आचार्य श्री राम शर्मा *"सफलता आत्मविश्वासी को मिलती है"* शिविरा पत्रिका
12. शर्मा, आर.ए., *''शिक्षा अनुसंधान'',* सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, 1998, पृ0 **60**
13. शर्मा, आर.ए., *''मापन एवं मूल्यांकन'',* ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, मेरठ, 1991,पृ0 **11**
14. शर्मा गायत्री *' 'सफलता की सीढी है – आत्मविश्वास"* शिविरा पत्रिका जनवरी 2014 पृ0 **31**
15. सिंह सुरजीत एवं ठकराल पी. *"सोशल मेच्यूरिटी एण्ड अकेडमिक एचिवमेंट ऑफ स्कूल स्टूडेंटस"* कनाडियन जनरल ऑन साइटिफिक जनरल 2016